वर्तमान में जीवनमूल्यों की प्रासंगिकता

डॉ. राम प्रकाश
सहआचार्य एवं विभागाध्यक्ष
(बी.ए.बी.एड.)
राजस्थान शिक्षक प्रशिक्षण विद्यापीठ

शोधनिर्देशक
डॉ. यदु शर्मा
अधिष्ठाता, राज. विश्वविद्यालय
प्राचार्य, एस.एस. जैन सुबोध स्नाहकोत्तर महाविद्यालय

भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है। राष्ट्र के सभी व्यक्तियों का अपना अपना धर्म है। उसी धर्म से सम्बन्धित संस्कार उनमें व्याप्त हैं। इस सोच के आधार पर वे अपने जीवन मूल्यों जैसे - दया, सहिष्णुता, सहानुभूति, प्रेम, सद्भावना, सहभागिता, समन्वय, अहिंसा, उत्कृष्टता आदि का निर्वाह करते हुए अपने बच्चों में वैसे ही संस्कार विकसित करते हैं। उनके बच्चों के व्यवसाय एवं विषय चयन निर्धारित होते हैं। हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, जैन आदि विभिन्न विचारधारा वाले विद्यार्थियों में कुछ ऐसी मनोवृत्तियाँ विकसित हो जाती है जो जीवन मूल्यों, को प्रभावित करती है। इस प्रकार विभिन्न धार्मिक विचारधारा वाले विद्यार्थी अपने धार्मिक आदर्शो के अनुरूप शिक्षा ग्रहण करते है।

विद्यार्थियों में एक क्रियात्मक चिन्तन शैली का विकास होने लगता है जो आगे चलकर विषय चयन में सहायक होता है। प्राचीनकाल में वैदिक ऋचाओं के बीच बालकों को शिक्षा दी जाती थी जिससे युग पुरूष और महान चरित्र विकसित हुए। स्वर्ण युग से लेकर वर्तमान युग तक शिक्षा में अनेक रूप परिवर्तित हुए हैं। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे भवन्तु निरामयाः' के लोक कल्याणकारी मंत्रों के मंगल पाठ से विभिन्न धार्मिक विचारधाराओं में जीवनमूल्यों जैसे सत्य, अहिंसा अपरिग्रह, प्रेम, करूणा, सहिष्णुता आदि का समायोजन हुआ है।

मैक्समूलर के अनुसार - "ज्ञान, आध्यात्म, योग, विज्ञान, चिकित्सा तथा ज्योतिष आदि क्षेत्रों में धार्मिक दृष्टिकोण महत्वपूर्ण रहता है। ज्ञान को आचरण में समायोजित करने का विचार धार्मिक चिन्तन के अनुरूप चलता है। विश्व के कौने-कौने से मेगस्थनीज, अलबरूनी, ह्वगसाँग आदि अनेक विद्यार्थी प्रतिवर्ष यहाँ आते थे और जीवन मूल्यों की श्रेष्ठता का वर्णन करते थे। इससे सामाजिक आर्थिक, धार्मिक और नैतिक मूल्यों का विश्लेषण मिलता है।"

प्राचीन भारतीय हिन्दू समाज चार वर्णो (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र) में विभक्त था। मुस्लिम समाज दो वर्ग शिया और सुन्नी, जैन धर्म श्वेताम्बर और दिगम्बर, सिक्ख समाज सिक्ख और मोना सिक्ख तथा ईसाई समाज पाश्चात्य

और भारतीयता की विचारधारा में विभक्त रहा है। आज की शिक्षा में समाज, संस्कृति, आदर्शों के संरक्षण, परिवर्धन तथा परिमार्जन का कार्य समन्वित विचारों एवं वर्तमान की आवश्यकताओं के अनुरूप किया जाता है। वर्तमान में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की प्रवृत्ति एवं समझ के स्तर के अनुरूप पाठ्यक्रम एवं शिक्षण शैली में परिवर्तन शिक्षण को यथासम्भव रोचक तथा बोधगम्य बनाने के लिए किया जाता है। जीवन मूल्य सभी धर्मो एवं विचारधाराओं में समन्वय व समभाव उत्पन्न करते हुए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से प्रभावित है और वास्तविक पहलुओं से प्रमाणिक है। इससे धार्मिक भावना गौण होती प्रतीत होती है। धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक और नैतिक पिछड़नेपन से शिक्षार्थियों में परिवर्तन देखा जाता है।

वर्तमान में विभिन्न धार्मिक विचारधाराऐं (हिन्दू, मुस्लिम, जैन, सिक्ख तथा ईसाई) मुख्य दो वर्गों में बंट गई है पूँजीवादी और समाजवादी। धार्मिक आधार पर संचालित शिक्षण संस्थाओं में प्रत्येक धर्म के शिक्षार्थी बहुतायत में मिलते हैं।

जिनके जीवन मूल्यों का निर्धारण एवं समायोजन धार्मिक विचारों के अनुसार होता है। विकास की प्रक्रिया एवं शैक्षिक क्षमता का विकास तीव्र गति से होता है। उनमें भावनात्मक परिवर्तन होने लगते हैं। इस समय उनको सही मार्ग दर्शन और उचित वातावरण की आवश्यकता होती है। माता-पिता एवं निकट सम्बन्धी ही उनके दृष्टिकोण के अनुरूप विद्यार्थियों को प्रेरित करते हैं।

आज विज्ञान-प्रौद्योगिकी एवं प्रतिस्पर्धा के युग में परिवर्तन की प्रक्रिया व परिवर्तन की आवश्यकता एक सार्वभौमिक सत्य है। इस परिवर्तन चक्र में धार्मिक विचार परिवर्तित हुए हैं। इसका एक महत्वपूर्ण पक्ष शिक्षा है। शिक्षा के माध्यम से ही बालक की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास सम्भव है। शिक्षा विविध विचारशैली का एक समन्वित स्वरूप है। इसमें बालकों के सर्वांगीण विकास के साथ-साथ सामाजिक, धार्मिक एवं मानवीय मूल्य अनिवार्य है। ईश्वर भक्ति, धार्मिकता, चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व का विकास, समायोजन, नागरिक व सामाजिक कर्तव्यों का पालन, कुशलता की उन्नति, संस्कृति का संरक्षण तथा उद्देश्य प्राप्ति के लिए संघर्ष करना इसके आदर्श हैं जो निरन्तर शिक्षा सिद्धान्तों के अनुरूप विकसित होते हैं। वैदिक काल की शिक्षा और वर्तमान शिक्षा प्रणाली समयचक्र के अन्तराल व आवश्यकतानुरूप मानवीय गुणों के समावेश से भिन्न है। वैदिक कालीन शिक्षा में ऋषि, मुनि एवं महात्माओं द्वारा शास्त्रार्थ, तर्क व कंठस्थीकरण पर बल दिया जाता था। इस काल में 'अग्र शिष्य प्रणाली' भी प्रचलित थी। वर्तमान में शिक्षा सिद्धान्तों को महत्वपूर्ण माना जाता है जो कि सर्वांगीण विकास एवं कौशल विकसित कर सके। शिक्षण विधियों, प्रविधियों, सहायक उपकरणों का प्रयोग, संचार के विविध माध्यम तथा इनरेक्टिव चर्चा के तरीकों ने धार्मिक

विचारों को गौण कर दिया है लेकिन पिछड़े वातावरण में विघटनकारी तर्कों का प्रभाव है।

महात्मा गांधी, विनोबा भावे एवं लोकमान्य तिलक ने गीता के माध्यम से बालकों में जीवन मूल्य विकसित करने के लिए प्रेरित किया है। इससे शिक्षा व्यक्ति और समाज दोनों के लिए कल्याणकारी सिद्ध हो सकती है। चर्वाक दर्शन के अनुसार केवल "प्रत्यक्ष ही प्रमाण है।" हम बहुत सा कार्य अनुमान से करते है लेकिन अनुभव ज्ञान प्राप्ति का प्रमाणिक साधन है। ज्ञानार्जन के लिए उचित वातावरण एवं व्यवस्था दी जानी चाहिए।

जीवन मूल्य

मूल्य शब्द को विभिन्न दार्शनिकों, समाजशास्त्रियों और मनोवैज्ञानिकों ने अलग-अलग परिभाषित किया है। गुड ने मूल्य को सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक सौंदर्य बोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना है। विलियम्स ने हमारे व्यवहार के चयन करने में सहायक संकल्पनाओं को मूल्य बताया है। पारसन्स ने मूल्यों को 'चयन का मानदंड' बताते हुए कहा है कि समाज व्यवस्था के विभिन्न आयामों में मूल्यों को मानव व्यवहारों को अनुबन्धित करने वाला माध्यम माना है। मिल्टन का मानना है कि जीवन मूल्यों की जड़े सभी प्राणियों में बहुत गहरी होती हैं।

मूल्यों के प्रकार

सामान्यतः मूल्य दो प्रकार के होते हैं - नैमित्तिक मूल्य और आंतरिक मूल्य। किसी विशेष प्रयोजन के मूल्यों को नैमित्तिक मूल्य कहते हैं लेकिन जिन मूल्यों का अपने अतिरिक्त कोई प्रयोजन नहीं होता वे आंतरिक मूल्य होते हैं। आन्तरिक मूल्यों को जीवन मूल्यों में सामहित किया जाता है।

प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, बीकानेर, राजस्थान के नैतिक शिक्षा उपागम नामक प्रकाशन में 32 जीवन मूल्यों को बताया है, ये 32 जीवन मूल्य इस प्रकार हैं - (1) सच्चाई (2) सहयोग (3) साहस (4) परोपकार (5) सहानुभूति ..... (11) प्रेम (12) दृढ़निश्चय (13) क्षमता (14) मित्रता (15) सादगी (16) निर्भीकता (17) अनुशासन (18) दान (19) दया (20) धैर्य (21) सहिष्णुता (22) तत्परता (23) आत्मविश्वास (24) कर्त्तव्य परायणता (25) दूसरों का आदर (26) स्वावलम्बन (27) श्रम में निष्ठा (28) त्याग की भावना (29) दूसरों के गुणों की प्रशंसा (30) समाजसेवा की भावना (31) फिजूल खर्ची (32) आवश्यकता से अधिक संग्रह न करना।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली ने शिक्षा में सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों पर दस्तावेज में 83 मूल्यों को बताया है। ये इस प्रकार हैं - (1) दूसरों के सांस्कृतिक मूल्यों की सराहना (2)

अस्पृश्यता विरोध (3) नागरिकता (4) दूसरों की चिंता (5) दूसरों का ध्यान रखना (6) सहयोग (7) सामान्य अच्छा (8) प्रजातांत्रिक निर्णय लेना (9) व्यक्ति की महत्ता (10) शारीरिक कार्य का का सम्मान (11) साथी की भावना (12) अच्छे आचरण (13) राष्ट्रीय समाकल (14) आज्ञापालन (15) समय का सदुपयोग (16) ज्ञान की खोज (17) समय (18) करूणा (19) सामान्य लक्ष्य (20) शिष्टाचार (21) भक्ति (22) स्वास्थ्यकर जीवन (23) अखण्डता (24) शुचिता (25) निष्कपटता (26) आत्मनियंत्रण (27) साधन सम्पन्नता (28) नियमितता (29) दूसरों का सम्मान (30) वृद्धावस्था का सम्मान (31) सादा जीवन (32) सामाजिक न्याय (33) स्वानुशासन (34) स्व-सहायता (35) स्व-सम्मान (36) आत्मविश्वास (37) स्व-समर्थन (38) स्वाध्यान (39) आत्मनिर्भरता (40) आत्मनियंत्रण (41) समाजसेवा (42) मानव जाति की एकात्मकता (43) अच्छे व बुरे में विवेध का भाव (44) सामाजिक उत्तरदायित्व का भाव (45) स्वच्छता (46) साहस (47) जिज्ञासा (48) धर्म (49) अनुशासन (50) सहनशीलता (51) समानता (52) मित्रता (53) वफादारी (54) स्वतंत्रता (55) दूरदर्शिता (56) सज्जनता (57) कृतज्ञता (58) ईमानदारी (59) सहायता (60) मानवतावाद (61) न्याय (62) सत्यता (63) सहिष्णुता (64) सार्वभौमिक (65) सार्वभौमिक प्रेम (66) राष्ट्रीय व जन सम्पति का महत्व (67) पहल (68) दयालुता (69) जीवों के प्रति दया (70) धर्म परायणता (71) नेतृत्व (72) राष्ट्रीय एकता (73) राष्ट्रीय संचेतना (74) अहिंसा (75) शांति (76) देशभक्ति (77) समाजवाद (78) सहानुभूति (79) धर्म निरपेक्षता (80) पृच्छा भाव (81) दलभावना (82) समय की पाबंदी (83) दल कार्य।

वी.एन.के. रेड्डी ने अपनी पुस्तक 'मैन एजूकेशन एण्ड वैल्यूज' में तीन प्रकार के मूल्यों का वर्णन किया है - (1) भौतिक मूल्य (2) आर्थिक मूल्य (3) मनोवैज्ञानिक मूल्य।

मूल्य निर्धारण की प्रक्रिया

रथ, हर्मिन एवं साहमन ने मूल्य निर्धारण प्रक्रिया के सात मानदण्ड माने हैं - (1) स्वतंत्र चयन (2) विकल्पों में से चयन (3) सभी विकल्पों के परिणामों पर मनन के बाद चयन (4) महत्व देना (5) दृढ़तापूर्वक चयन करना (6) चयन की क्रियान्वति (7) पुनरावृत्ति।

शिक्षा में मूल्यों की आवश्यकता एवं महत्व

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के पैरा 8.4 और 8.5 में शिक्षा को सामाजिक और नैतिक मूल्यों के लिए एक प्रभावी उपकरण बनाने की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए मूल्य परक शिक्षा पर काफी बल दिया है। सांस्कृतिक विविधता वाले हमारे समाज में शिक्षा को लोगों के बीच एकता एवं अखण्डता की भावना जगाने वाले सार्वभौमिक

शाश्वत मूल्यों का विकास करना चाहिए ऐसी मूल्यपरक शिक्षा से रूढ़िवाद, धार्मिक उन्माद, हिंसा, अंधविश्वास और भाग्यवाद को समाप्त करने में मदद मिलेगी।

आज का विद्यार्थी विभिन्न विरोधों व भ्रमों में खोया हुआ महसूस कर रहा है। आज दोहरे मापदण्ड हो गऐ हैं। शाब्दिक रूप से जो बात कहते हैं, व्यवहार में अलग कार्य करते हैं। आज व्यक्ति भौतिकता की चकाचौंध में भारतीयता से हटकर पाश्चात्य संस्कृति जैसा दिख रहा है। व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक जीवन के मूल्य मानदण्ड शिथिल हो रहे हैं। व्यक्ति स्वकेन्द्रित हो गया है और उच्च संस्कारों व मानवीय गुणों से दूर हो गया है। मूल्यों की कमी के कारण ही सभी व्यक्ति अपने वर्तमान से संतुष्ट एवं परेशान दिखाई दे रहे हैं।

भारतीय जीवन मूल्य

भारतीय जीवन मूल्यों में चार पुरूषार्थ - धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को माना है। पुरूषार्थ का अर्थ प्रयोजन है और सुखी जीवन की प्राप्ति मानव जीवन का सबसे बड़ा प्रयोजन है। मानव जीवन में ज्ञान की प्राप्ति से ही मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। मनुस्मृति में मनु ने धर्म के 10 लक्षण बताए हैं - क्षुति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह, घी, विद्या, सत्य एवं आक्रोश। ये नैतिक एवं आध्यात्मिक उत्थान के लिए आवश्यक हैं। अर्थ की भारतीय दर्शन में धर्म की सिद्धि के लिए माना है। काम को शारीरिक एवं मानसिक दोनों प्रकार के आनन्द के लिए लिया है। शारीरिक आनन्द या इन्द्रिय सुख से समाज अक्षुण बना रहता है।